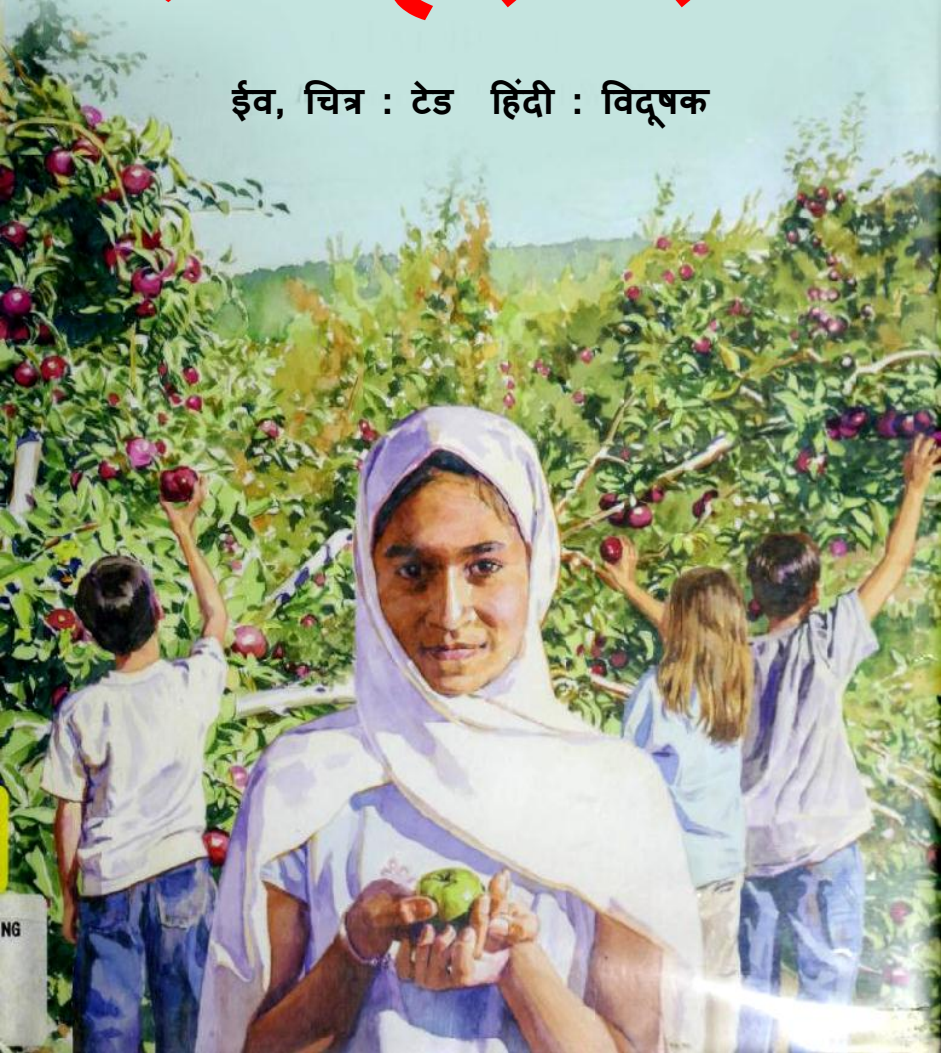


एक हरा सेब

ईव, चित्र : टेड हिंदी : विदूषक



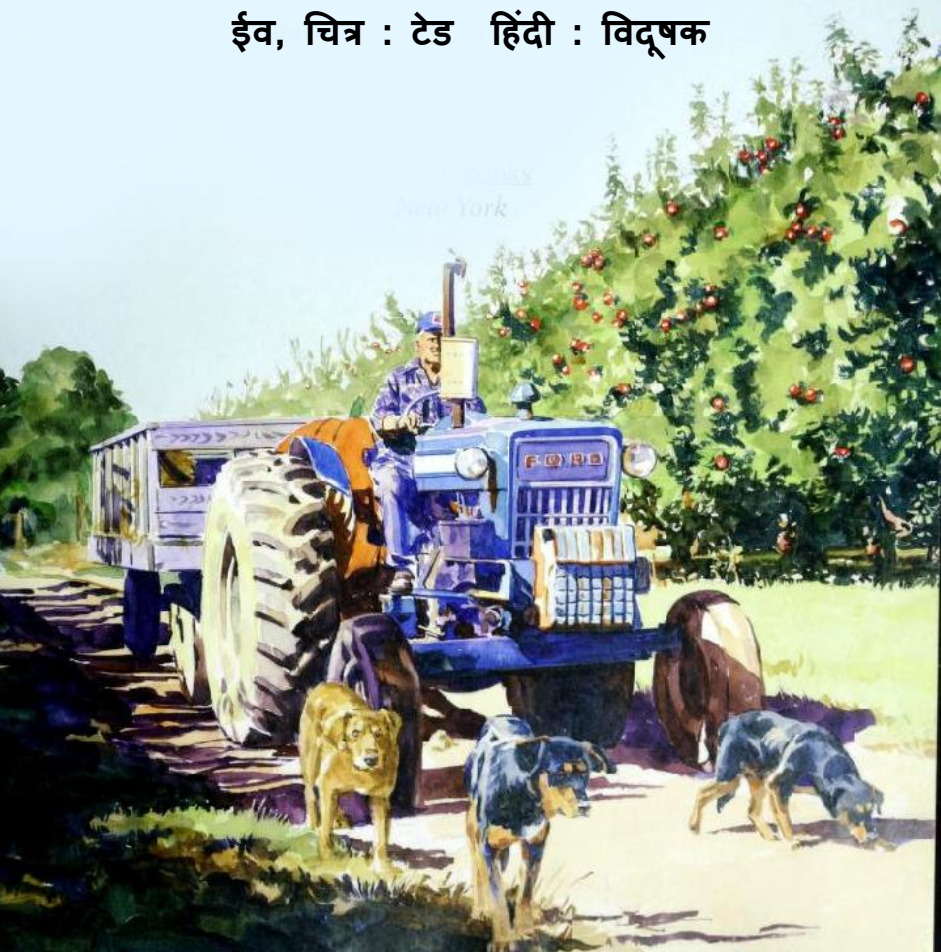
फराह अपने दोस्तों से घिरी होने के बावजूद भी खुद को अकेला महसूस करती है. वो सुनती है और सिर हिलाती है पर कुछ बोलती नहीं है. नए स्कूल में किसी भी बच्ची के लिए जाना एक कठिन काम है, खासकर किसी दूसरे मुल्क में जहाँ की भाषा उसके लिए बिल्कुल नई हो. फिर एक दिन पूरा क्लास सेब के बाग की सैर करने जाता है. वहां फराह को पहली बार कुछ आवाजें, अपने घर की आवाजों जैसी लगती हैं. उनमें कुत्तों के खाने की आवाज़ से लेकर दोस्ती की आवाजें भी शामिल हैं.

दिल को छूने वाली यह कहानी एक युवा मुस्लिम प्रवासी लड़की की है. उम्मीद है, टेड के सुन्दर चित्र और ईव की संवेदनशील कहानी आपको ज़रूर पसंद आएगी.

इस नायाब किताब को **सर्वप्रथम अरब-अमेरिकन बुक अवार्ड** मिला.

एक हरा सेब

ईव, चित्र : टेड हिंदी : विदूषक





On

Special

—LL—







आज नए स्कूल में मेरा दूसरा दिन है. मैं हाल ही में इस नए देश में आई हूँ. आज स्कूल में कोई पढ़ाई नहीं होगी क्योंकि आज हम कहीं घूमने जायेंगे. बाकी दिन ऐसे नहीं होंगे.

कल मैं फिर अपने क्लास में जाऊंगी और वहां मैं अंग्रेजी बोलना सीखूंगी.

माँ हमें वहां तक ले जाकर छोड़ती है जहाँ से सेब का बाग़ शुरू होता है. वहां पर सूखी घास से भरी एक ट्राली हमारा इंतज़ार कर रही है. हम लोग ट्राली में चढ़ते हैं और घास के बंडलों की टेक लगाकर बैठते हैं. ट्राली को एक ट्रैक्टर खींचता है. ट्राली धक्के खाते हुए आगे बढ़ती है. लड़के-लड़कियों को एक-साथ बैठे देख, मुझे कुछ अजीब सा लगता है. मेरे गाँव में ऐसा कभी भी देखने को नहीं मिलता.

बाकी छात्र एक-दूसरे को तो जानते हैं, पर वे मुझे नहीं जानते हैं और मैं उन्हें नहीं जानती हूँ. जब वो आपस में बातें करते हैं तो मुझे कुछ समझ में नहीं आता है. मुझे उनकी भाषा में बोलना नहीं आता है. उनमें से कुछ दोस्ताना किस्म के हैं. पर उनमें से कई मुझे देखकर एक क्रूर तरीके से मुस्कराते हैं. वो अपनी बातों में मेरे देश का ज़िक्र करते हैं लेकिन प्यार से नहीं.

इस मौके पर मुझे घर जाना अच्छा लगता. मेरे पिताजी ने मुझे समझाया था, इस इस नए देश में हमें हमेशा लोगों से प्यार नहीं मिलेगा. "हमारे अपने देश में परेशानियां हैं और इस नए देश में भी परेशानियां होंगी," उन्होंने कहा था. "पर कुछ समय बाद हमारे लिए यहाँ पर रहना अच्छा होगा."

उसके लिए कितना समय लगेगा? मैं अचरज करती हूँ.



मैं कई बातों में उनसे अलग हूँ. मेरी जीन्स और टीशर्ट चाहें उनके जैसी ही दिखती हों, पर मैं दुपट्टे से अपने सिर और कन्धों को ढंकती हूँ. मैंने यहाँ पर किसी और को दुपट्टा पहने हुए नहीं देखा. जबकि मेरे अपने देश में सभी औरतें और लड़कियां दुपट्टा पहनती हैं.



फिर मेरे पास बैठी लड़की मुझे देखकर मुस्कुराती है. वो अपनी ओर इशारा करके कहती है, “एना.” फिर वो मेरी ओर इशारा करके कहती है, “फराह!”

जवाब में मैं अपना सिर हिलाती हूँ और कहती हूँ, “फराह,” जो कि मेरा नाम है. फिर मैं बाहर खेतों की तरफ देखती हूँ जहाँ गाएँ घास चर रही हैं.



में खुद को अन्दर से जकड़ा हुआ महसूस करती हूँ.

फिर तीन कुत्ते आते हैं और हमारे आगे-आगे दौड़ते हैं. मुझे लगता है कि वे कुत्ते यहीं के हैं और रास्ता अच्छी तरह से जानते हैं.

मेरे पास भी कभी एक पालतू कुत्ता था. उसका नाम था - हदीस.







हम उस जगह पर रुकते हैं जहाँ पर सेब के पेड़ों का एक झुरमुटा है।
तब मुझे मालूम पड़ता कि हम लोग वहां पर फल तोड़ने के लिए आए हैं।
कई पुराने सेब, पेड़ों से झड़कर नीचे गिरे थे और तीनों कुत्ते उन्हें खाने लगे।

खच्च !

खच्च !

खच्च !

उनके खाने की आवाज़ बिल्कुल मेरे कुत्ते हदीस जैसी ही थी।



फिर टीचर ने हम सबको उनके पास इकट्ठा होने को कहा. उसके बाद उन्होंने पूरे क्लास से कुछ कहा. फिर टीचर ने मेरी तरफ बड़े प्यार से देखा. “एक,” उन्होंने कहा. फिर उन्होंने एक सेब को छुआ और उसे उठाया. “एक,” उन्होंने दुबारा दोहराया. मुझे भी सिर्फ एक सेब लेना है, जैसा कि बाकी छात्रों के किया था. मैं अपना सिर हिलाती हूँ. मैं टीचर से कहना चाहती थी, “मुझे आपकी बात पूरी तरह समझ में आई. मैं बुद्ध नहीं हूँ. इतना ज़रूर है कि इस नई दुनिया में मैं कुछ खोई हुई हूँ.”

टीचर को मैं यह कैसे बताऊँ? यह मुझे अभी नहीं पता.



मैं फिर दूसरों से कुछ दूर चली जाती हूँ. मेरे पास एक पेड़ है, जो दूसरों के मुकाबले छोटा है. वो भी मेरे जैसा ही छोटा और अकेला है. उसकी शाखाँ से कुछ हरे रंग के सेब लटके हैं. उनमें से मैं एक सेब तोड़ती हूँ. वो सेब मेरे हाथ में अच्छी तरह से फिट आता है.

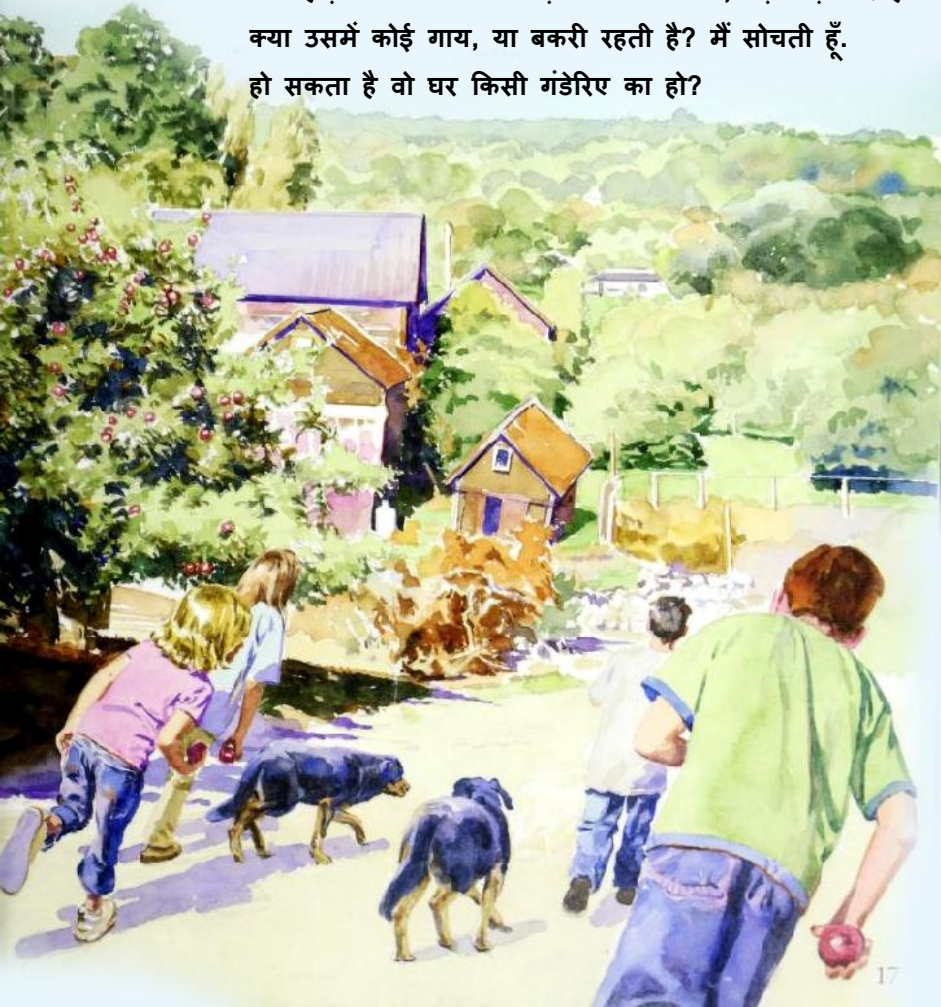






उसके बाद हम सब अपने-अपने सेब हाथ में पकड़कर एक छोटी पहाड़ी से नीचे फिसलते हैं. हमारे आगे-आगे कुत्ते तेज़ी से भागते हैं. उनके गुलाबी और चमकीले कान, हवा में पीछे को लहराते हैं.

पहाड़ी के नीचे एक लकड़ी का बना छोटा, टेढ़ा-मेढ़ा घर है. क्या उसमें कोई गाय, या बकरी रहती है? मैं सोचती हूँ. हो सकता है वो घर किसी गंडेरिए का हो?



उस घर में एक लकड़ी की बनी मशीन है जिसका हैंडल लोहे का बना है. वहां अन्दर मुझे कोई गाय, बकरी या गंडेरिया नहीं दिखता है. वो घर वहाँ पर किसी और कारण से था.



वहां पर टीचर ने हम सबसे एक लाइन में खड़ा होने को कहा. एक-एक करके हम सब अपने-अपने सेब एक मशीन में डालते हैं. मैं सबसे अंत में ही अपना सेब मशीन में डालूंगी. तभी टीचर कुछ कहने को होती हैं. पर वो सिर्फ मुस्कुराती हैं और अपने कंधे उचकाती हैं. एक लड़का चिल्लाता है, "देखो!" वो मेरे पास आता है, जैसे कि वो मुझे अपने सेब को मशीन में डालने से रोकना चाहता हो. पर तब तक देर हो चुकी होती है. मशीन, मेरे सेब को निगल लेती है.



उस मशीन के अन्दर चाकू जैसे ब्लेड्स हैं जो सेब के टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं.

कच्य!

कच्य!

कच्य!

कुछ छात्र मशीन के हैंडल को घुमाते हैं.

उससे सेब के टुकड़े कसकर दबते हैं.



सेब के छिलके मशीन में ही रहते हैं और सेब का रस नीचे को बहता है।
में सबसे पीछे रहती हूँ। मुझे पक्की तरह नहीं पता कि मैं बाकी लोगों के साथ रहूँ या नहीं।

हैंडल को घुमाना काफी मुश्किल काम है। कुछ बच्चे हैंडल घुमाते हुए हांप रहे हैं। मैं ताकतवर हूँ। मैं उनकी मदद कर सकती हूँ। फिर मैं उनकी तरफ बढ़ती हूँ।



तभी एना मुझे इशारा करके अपने पास बुलाती है.
एक लड़का हैंडल पर मेरे हाथ के लिए जगह बनाता है.

इससे मैं खुश होती हूँ.



हम लोग मिलकर मशीन का हैंडल घुमाते हैं. काम कठिन है पर हम सब इकट्ठा मिलकर उसे कर पाते हैं.

बूँद-बूँद करके सेब का रस नीचे टपकता है.

टपा!

टपा!

टपा!



टीचर अपने साथ कागज़ के कप लाई हैं। हम सब फिर से लाइन बनाते हैं, अपने-अपने कप भरते हैं और रस पीते हैं। सभी बच्चे जीभ से अपने हॉट चाटते हैं। मुझे लगता है जैसे मैंने अपने विशेष सेब का रस पिया हो।

“एप्पल साइडर,” एना ने कहा। हम सेब का जूस पी रहे हैं। मैं उसके शब्दों को अन्दर-ही-अन्दर दोहराती हूँ, “एप-पिल.” दूसरा शब्द मेरे लिए काफ़ी मुश्किल है।

टीचर अब कुछ बोल रही हैं। वो खाली कपों को इकट्ठा करने के लिए एक थैली देती हैं। वो इशारे से हमें बताती हैं कि अब हमें वापिस चलने की तैयारी करनी चाहिए।







ट्राली में वापसी यात्रा के समय एना मेरे पास बैठती है. मेरे दूसरी ओर एक लड़का बैठा है. "जिम," वो खुद की ओर इशारा करते हुए कहता है.

मैं उसे देखकर सिर हिलाती हूँ. "जिम," मैं चुपचाप दोहराती हूँ.

सूखी घास मुझे चुभती है और गुलगुली करती है. एना को छींक आती है. घास में से सूखी धूप की खुशबू आती है.



जिम अपने पेट को थपथपाता है, और फिर उसके गले से एक डकार निकलती है. हर कोई हँसता है. मैं भी.

यहाँ भी हंसी की वही आवाजें हैं जो घर पर होती हैं. बिल्कुल वही. छींक, डकार और अन्य चीज़ों की आवाजें भी वैसी ही हैं. सिर्फ शब्द मेरे लिए अभी भी अजनबी हैं. पर जल्द ही मैं उन्हें भी सीख जाऊंगी. मैं भी उनके साथ वैसे ही घुलमिल जाऊंगी जैसे मेरा सेब, बाकी सेबों के साथ पिसकर *साइडर* बना.

फिर मैंने एक गहरी सांस ली.





“एप-पिल,” मैंने कहा.

यह सुनकर एना ने ताली बजाई.

मैं मुस्कराई

और मुस्कराई

और मुस्कराई.





पहली बार मैंने कोई विदेशी शब्द बोला था.

जल्द ही मैं ऐसे बहुत से शब्द बोलूंगी.

